गरीब का सेब
अमरूद

इसका वैज्ञानिक नाम सिडियम ग्वाजावा है।
उत्पत्ति स्थान उष्ण कटिबंधीय अमेरिका है।
भारत में इसका प्रवेश 17वीं शताब्दी में हुआ था।

अन्य फलदार पौधों की तुलना में इसकी कुछ खास विशेषताओं जैसे विभिन्न प्रकार की भूमि एवं जलवायु में सफलतापूर्वक पनपने, कम समय में फलत, सहज फलन की प्रवृति, आकर्षक रंग, आकार एवं स्वाद ने इसकी लोकप्रियता को बढ़ा दिया है। गुणों के मामले में इसके फल सेब से भी अच्छे माने गये हैं। बार्बेडोज चेरी एवं आंवला के बाद "विटामिन सी" की मात्रा इसमें अन्य फलों की तुलना में अधिक पायी जाती है। फलों के अलावा इसकी पत्तियां भी उल्टी, दस्त के उपचार में लाभकारी पाइ गयी हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अमरूद की कई उन्नत किस्में विकसित की हैं। कुछ प्रमुख किस्मों एवं उनकी खासियत निम्नलिखित हैं:

इलाहाबाद सफेदा : फल गोल, चमकदार सतह, सफेद गूदे वाले तथा मीठे होते हैं।

लखनऊ-49 (सरदार) : इसके पौधे, छोटे और फल बड़े आकार के खुरदरे सतह वाले होते हैं, सफेद गूदे तथा स्वाद में उत्तम होते हैं।

श्वेता : एक अधिक उत्पादन वाली किस्म है। फल गोल, मुलायम कम बीज वाले, श्वेत आभायुक्त पीले रंग के मध्यम आकार के होते हैं, जिन पर कभी कभी लालिमा भी उभर आती है।

अर्का मृदुला : पौधे मध्यम आकार के, फल गोल, गूदा सफेद बीज मुलायम तथा कम संख्या में होते हैं। **यह जैली बनाने के लिए अच्छी किस्म है।**

अर्का अमूल्य : पौधे मध्यम आकार के फैलने वाले होते हैं। फल गोलाकार, मुलायम, कम बीज वाले सफेद गूदायुक्त होते हैं।

इलाहाबाद सफेदा

अर्का रश्मि

अर्का अमूल्य